

ОГЛАВЛЕНИЕ

| | |
|---|------------|
| Введение | 6 |
| | |
| ГЛАВА 1. Период наивысшего развития канона в литературе XIII – начала XVI в. Зрелая классика | |
| | |
| ЛИТЕРАТУРА XIII–XIV вв. | 16 |
| Литературная жизнь «большого Ирана» | |
| после монгольского нашествия | 16 |
| Джалал ад-Дин Руми (Маулана) | 20 |
| Са‘ди | 34 |
| Низари Кухистани | 53 |
| Амир Хусрав Дихлави | 59 |
| Эпоха и современники Хафиза | 75 |
| Хафиз | 79 |
| ‘Убайд Закани | 93 |
| Абу Исхак (Бусхак) Ат‘има Ширази | 105 |
| | |
| ЛИТЕРАТУРА XV – НАЧАЛА XVI вв. | 111 |
| Апогей классической традиции и начало переходной эпохи | 111 |
| ‘Абд ар-Рахман Джами | 122 |
| Поэтическая школа Джами и Наваи | 158 |
| Бадр ад-Дин Хилали | 158 |
| Камал ад-Дин Бинаи | 161 |

ГЛАВА 2. Период трансформации канона в персоязычной литературе XVI – начала XVIII в. Поздняя классика

| | |
|---|-----|
| ЛИТЕРАТУРА XVI – НАЧАЛА XVIII ВЕКА | 169 |
| «Стилистическая революция»: | |
| расцвет «особой манеры» в поэзии | 169 |
| Баба Фигани Ширази | 175 |
| Вахши Бафки (Йезди) | 180 |
| Мухташама Кашани | 189 |
| ‘Урфи Ширази | 193 |
| Назири Нишапури | 197 |
| Талиб Амули | 205 |
| Калим Кашани (Хамадани) | 209 |
| Тарзи Афшар | 216 |
| Саиб Табризи (Исфахани) | 222 |
| Шаукат Бухари (Бухараи) | 240 |
| Сайдо Насафи | 248 |
| Мирза ‘Аbd ал-Кадир Бидиль | 260 |
| ЛИТЕРАТУРА В ИРАНЕ XVIII в. | 274 |
| Под знаком «возврата к древности» | 274 |
| Моштаг Исфахани | 276 |
| Хатеф Исфахани | 288 |
| Шиитская мистериальная драма – <i>ta‘зийе</i> | 302 |

ГЛАВА 3. Проза XIII–XVIII вв.

| | |
|--|-----|
| Обрамленная повесть | 317 |
| Суфийская агиография | 324 |
| Поэтическая антология | 327 |
| «Удивительные события» Зайн ад-Дина Васифи | 343 |
| Народный роман (дастан) | 350 |
| Заключение | 356 |
| Предметно-именной указатель | 361 |
| Библиография | 372 |
| Аннотация (на английском языке) | 381 |